**C.B.S.E**

**कक्षा : 10**

**हिन्दी A – 2012**

**(Outside Delhi)**

**[Summative Assessment II (CCE)]**

**समय: 3 घंटे** **पूर्णांक : 90**

**सामान्य निर्देश :**

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं-क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : **1 x 5 = 5**

पाटलिपुत्र पहुँचकर यूनानी दूत मेगास्थनीज आचार्य विष्णुगुप्त से भेंट करने के लिए नगर की सीमा से बाहर स्तिथ उनकी कुटिया पर जब पहुँचा, उस समय शाम ढलने ही वाली थी, अँधेरा छाने लगा था। मेगास्थनीज ने बाहर से ही देखा कि आचार्य अपने आसन पर बैठे कुछ काम करने में लगे हुए है। प्रकाश की व्यवस्था के लिए वहीं रखी एक तिपाई पर दीया जल रहा था। मेगास्थनीज के द्वार के निकट पहुचने पर आचार्य ने उसे भीतर आकर स्थान ग्रहण करने का संकेत किया और स्वयं अपने कार्य में तल्लीन रहे। कुछ समय के उपरांत उन्होंने अपना कार्य समाप्त करके प्रकाशमान दीपक को बुझा दिया और पास ही रखा एक अन्य दीपक जला लिया। मेगास्थनीज सोचने लगा कि जब एक दीपक जल ही रहा था तो आचार्य ने उसे बुझाकर दूसरा दीपक क्यों जलाया? उससे रहा नहीं गया और उसने आचार्य से इसका कारण पूछ ही लिया। आचार्य ने सहजता से कहा, ‘ तुम जब यहाँ आए, तब मैं जो काम कर रहा था, वह राज्य-व्यवस्था से सम्बंधित था और तब जो

दीपक जल रहा था, उसका खर्च शासन-तंत्र उठाता है। लेकिन अब चूँकि वह कार्य समाप्त हो गया, इसलिए मैंने वह दीपक बुझा दिया। अभी जो दीपक जला रखा है उसके खर्च का वहन मैं अपनी आय से करता हूँ। मैं अपने व्यक्तिगत कार्य के लिए राज्य के संसाधन का दुरुपयोग कैसे कर सकता हूँ?'

1. आचार्य विष्णुगुप्त कहाँ रहते थे?

    (क) पाटलिपुत्र के भव्य भवन में। (ख) गाँव की एक मामूली झोपड़ी में।

    (ग) नगर की सीमा से बाहर कुटिया में। (घ) गंगातट पर बने आश्रम में।

2. मेगास्थनीज की सोच का कारण था-

    (क) विष्णुगुप्त का कुटिया में निवास करना।

    (ख) उनका अत्यन्त व्यस्त रहना।

    (ग) एक दीपक बुझाकर अन्य दीपक जलाना।

    (घ) अपने कार्य को समय पर निबटाना।

3. मेगास्थनीज ने आचार्य से क्या पूछा?

    (क) उनके स्वास्थ्य की कुशल। (ख) दूसरा दीपक जलाने का कारण।

    (ग) राज्य-व्यवस्था के बारे में। (घ) राज्य की प्रजा के विषय में।

4. दीपक की घटना संदेशवाहक है-

    (क) प्रशासक की कर्मठता की।

    (ख) प्रशासक की नैतिक जवाबदेही की।

    (ग) प्रशासक की कुशल प्रशासन शैली की।

    (घ) राज्य के प्रति प्रशासकीय निष्ठा की।

5. 'दुरुपयोग शब्द' में उपसर्ग है-

(क) दु (ख) दुर

(ग) दुरु (घ) दूर

प्र. 2. प्रस्तुत गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : **1 x 5 = 5**

जीवन का कोई भी रास्ता सफल अथवा निर्बाध नहीं होता। कामयाबी के हर रास्ते में कई मुश्किलों का आना तय है। हर बड़ी सफलता के पीछे अनेक छोटी-छोटी असफलताएँ छिपी रहती हैं।

किसी बडे पत्थर के टुकड़े करने के लिए हमें उस पर असंख्य प्रहार करने पडते है। अंत में एक प्रहार ऐसा होता है कि वह पत्थर को दो टुकड़ो में बाँट देता है। लेकिन क्या अंतिम प्रहार पहले किए गए प्रहार से पहले किए गए सारे प्रहार निरर्थक थे? नहीं। ऊपर से बेशक पहले का हर प्रहार निरर्थक लगता हो लेकिन हर प्रहार पूरी तरह सार्थक था क्योंकि उन प्रहारों में ही बेशक पहले का हर प्रहार निरर्थक लगता हो लेकिन हर प्रहार पूरी तरह सार्थक था क्योंकि उन प्रहारों में ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी हुई थी। हर चोट ने निरंतर उस पत्थर को टूटने के अधिकाधिक निकट ला दिया था। वास्तव में थोडी-बहुत असफलताओं के बिना सफलता संभव ही नहीं।

व्यक्ति अपनी सफलताओं की बजाय असफलताओं से सीखता है। हर असफलता से उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर मिलता है। सफलता के बाद हम कभी अपना पुनर्मूल्यांकन नही करते। समस्या आए बगैर हम रास्ता नहीं खोजते। समस्याएँ ही हमें उपाय खोजने के लिए प्रेरित करती है, हमें चिंतनशील बनाती हैं, हममें धैर्य का विकास करती हैं। ठोकर खाने के बाद ही हम अपनी असफलता का कारण जानने का प्रयास करते है। उसके बाद ही नए सिरे से आगे बढ़ने के लिए अपनी क्षमता का विकास करते हैं।

जीवन की हर असफलता किसी बड़ी सफलता का आधार बनती है।

1. बड़ी सफलता के पीछे असफलताएँ छिपी रहती हैं, क्योंकि
   (क) दुनिया में फूलों के साथ काँटे भी होते हैं।
   (ख) रुकावटों को हटाकर ही आगे बढ़ा जाता है।
   (ग) जीवन का कोई भी मार्ग बाधा रहित नहीं होता।
   (घ) प्रत्येक कार्य में रुकावटें किसी-न-किसी रुप में आती ही हैं।

2. पत्थर पर पड़ने वाले असंख्य प्रहार सिद्ध करते हैं कि
   (क) छोटी-छोटी असफलताओं को जीतकर ही बड़ी सफलता मिलती है।
   (ख) बढ़ा पत्थर लगातार छोटे प्रहारों से ही टूटता है।
   (ग) उन पर ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी है।
   (घ) पत्थर बड़े प्रहार से नहीं टूट सकता।

3. व्यक्ति सफलताओं की बजाय असफलताओं से अधिक सीखता है, क्योंकि
   (क) असफलताएँ उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर देती हैं।
   (ख) सफलताएँ यह अवसर नहीं देतीं।
   (ग) सफलता प्राप्ति पर व्यक्ति निश्चिन्त हो जाता है।
   (घ) असफलताएँ उसको सफलता के लिए प्रेरित करती हैं।

4. गद्याश का उपयुक्त शीर्षक है
   (क) सफलता का मार्ग
   (ख) सफलता और असफलता
   (ग) असफलताओं से प्रेरणा
   (घ) असफलता सफलता का आधार

5. 'आधार' का पर्यायवाची शब्द है

(क) धारदार

(ख) स्तर

(ग) <u>बुनियाद</u>

(घ) जड

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछेगए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : **1 x 5 = 5**

मान लूँ मैं हार कैसे

रोकना मुझको असंभव रुप की मदिरा पिलाकर,
ईंट-पत्थर औरे काँटे राह में मेरी बिछाकर,
रुक नहीं सकता कदम गर उठ गया जलती चिता पर,
उठ गया तो क्या चिता, शव उठ चलेगा साथ पथ पर,
सौंप दूँ दुर्भाग्य को अपना मनुज-अधिकार कैसे?
आज अंतर-प्यास मेरी रस नहीं, विष चाहती है,
दग्ध प्राणों में प्रलय की गूँज भरना चाहती है।
चाहता मन सिंधु-नभ-थल-गिरी-अतल को जीत लेना,
जिंन्दगी मेरी कहीं पर भी न रुकना चाहती है,
मैं मरुस्थल का पथिक हूँ, सींच दूँ रसधार कैसे?

1. लक्ष्य की ओर बढ़ते पथिक के मार्ग में बाधक नहीं है

(क) रुप की मदिरा।

(ख) मार्ग की बाधाएँ।

(ग) दुर्भाग्य का अभिशाप।

(घ) जलती चिता।

2. अपराजेय पथिक हार न मानता हुआ चाहता है

(क) मदिरा द्वारा अन्तर की प्यास बुझाना।

(ख) उत्साही जीवन में विनास की हुंकार भरना।

(ग) मार्ग की बाधाओं को हटाना।

(घ) विजय के मार्ग को प्रशस्त करना।

3. पथिक किस पर विजय प्राप्त करना चाहता है

(क) पथ की बाधाओं पर।

(ख) मरुभूमि जैसे रसहीन जीवन पर।

(ग) सागर, आकाश, भूमि और पर्वत पर।

(घ) गतिहीन जीवन पर।

4. 'मैं मरुस्थल का पथिक हूँ' पंक्ति का आशय है

(क) मैं रेतीले मैदान का बटोही हूँ।

(ख) मैं युध्दस्थली का योध्दा हूँ।

(ग) मैं कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलने का आदी हूँ।

(घ) गतिहीन जीवन पर।

5. मनुज-अधिकार में समास है

(क) द्विगु

(ख) कर्मधारय

(ग) तत्पुरुष

(घ) बहुव्रीहि

प्र. 4. नीचे लिखे पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : **1 x 5 = 5**

धूप की तपन खुद सहने
छाँव सबको देने का प्रण
पेडों ने लिया,
धूप ने बदले में
फूलों को रंगीन
पेड़ों को हरा-भरा कर दिया।
हजारों मील चलकर
गई थीं जो नदियाँ
और मीठा पानी खारी समंदर को दिया
बदल गया इतना मन समंदर का
रख लिया खारीपन पास अपने
और बादलों के हाथ
भेजा मीठे जल का तोहफा
नदियों को फिर जिसने भर दिया।

1. पेड़ों की प्रतिज्ञा है

(क) सबको फल देना। (ख) धूप की तपन लेना।

(ग) स्वयं कष्ट उठाकर सुख देना। (घ) संसार का हित करना।

2. बदले में धूप पेड़ों को देती है

(क) शीतल छाया। (ख) फूलों की सुगंध।

(ग) पत्तों की हरियाली। (घ) शाखाओं की मजबूती।

3. नदियाँ हजारों मील किसलिए चलती हैं?

(क) प्राणियों की प्यास बुझाने के लिए।

(ख) भूमि को उर्वर बनाने के लिए।

(ग) सागर को मीठा जल देने के लिए।

(घ) मरुस्थल को सरस बनाने के लिए।

4. सागर नदियों का ऋण चुकाता है

(क) उनके मीठेपानी को स्वीकार कर।

(ख) उनके खारी जल का उपहार देकर।

(ग) मेघों के माध्यम से मीठा जल भेजकर।

(घ) नदियों की बाढ़ का कारण बनकर।

5. कविता का संदेश है

(क) जैसे के साथ तैसा व्यवहार।

(ख) अपकारी के प्रति उपकार का भाव।

(ग) उपकारी के प्रति गहन कृतज्ञता।

(घ) कृतघ्नता का अभिशाप।

## खंड - ख

प्र. 5. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांक्ति शब्दों का पद-परिचय दीजिए : **1 x 5 = 5**

1. उसने उनके <u>अनुकरणीय</u> जीवन को नमन किया।

उत्तर :

2. उन्होंने <u>श्रध्दांजलि</u> अर्पित की।

उत्तर :

3. वे माँ की स्मृति में <u>अक्सर</u> डूब जाते।

उत्तर :

4. <u>जैसा</u> करोगे, वैसा भरोगे।

उत्तर :

5. <u>प्रिया।</u> तुम सचमुच बहुत अच्छी हो।

उत्तर :

प्र. 6. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए : **1 x 5 = 5**

1. वे भारत आए और 73 वर्ष की जिंदगी जीकर स्वर्गवासी हो गए (सरल वाक्य में)

उत्तर :

2. हमारी गोष्ठियों में वे गम्भीर बहस करते। (सतल वाक्य में)

उत्तर :

3. स्वास्थ्य ठीक होने पर मैं भी आपके साथ चलता। (संयुक्त वाक्य में)

उत्तर :

4. छोटे होने पर मैं खूब साइकिल चलाता था। ( मिश्र वाक्य में)
उत्तर :

5. यदि इस बार वर्षा न हुई तो सारी फसल नष्ट हो जाएगी।
(सरल वाक्य में)
उत्तर :

प्र. 7. निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य परिवर्तन कीजिए : **1 x 5 = 5**

1. बालक पत्र लिखता है। (कर्मवाच्य)
उत्तर :

2. बच्चों से खेला जाएगा। (कर्तृवाच्य में)
उत्तर :

3. मैंने खाना खाया। (कर्मवाच्य में)
उत्तर :

4. राम नहीं सोता। (भाववाच्य में)
उत्तर :

5. बच्चे जगह-जगह पेड़ लगा रहे हैं। (कर्मवाच्य में)
उत्तर :

प्र. 8. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए : **1 x 5 = 5**

1. नीलकमल-सी आँखें उसकी, आज न जाने क्या-क्या कह गईं।
2. पाकर प्रथम प्रेम भरी पाती प्यारी प्रियतम की।
3. ऊषा सुनहले तीर बरसाती जय लक्ष्मी-सी उदित हुई।
4. मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों।
5. पानी गए न ऊबरे मोती मानुस चून।

## खंड - ग

प्र. 9. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प छाँटकर लिखिए : **1 x 5 = 5**

भारतरत्न से लेकर इस देश के ढ़ेरों विश्वविदयालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत वह संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पदमविभूषण जैसे सम्मानों से नही, बल्कि अपनी अजेय संगीतयात्रा के लिए बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे। नब्बे वर्ष की भरी-पूरी आयु में 21 अगस्त, 2006 को संगीत-रसिकों की हार्दिक सभा से विदा हुए खाँसाहब की सबसे की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा।

1. बिस्मिल्ला खाँ को प्राप्त सर्वोच्च सम्मान था
   (क) पदमविभूषण।
   (ख) संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार।
   (ग) विश्वविदयालयों की मानद उपाधियाँ।
   (घ) भारतरत्न।

2. बिस्मिल्ला खाँ हमेशा के लिए संगीत के नायक क्यों बने रहेंगें?

(क) शहनाई की जादुई आवाज के कारण।

(ख) सातों सुरों को बरतने की तमीज के कारण।

(ग) भाईचारे की भावना को मजबूत करने के कारण।

(घ) अजेय संगीतयात्रा के कारण।

3. बिस्मिल्ला खाँ की सबसे बड़ी देन है

(क) संगीत-रसिकों को रसविभोर करना।

(ख) संगीत की शास्त्रीय परम्परा को जागृत रखना।

(ग) संगीत की पूर्णता एवं ज्ञान की इच्छा को जीवन-भर सँजोए रखना।

(घ) एक सच्ची इन्सानियत का उदाहरण पेश करना।

4. संगीत नाटक अकादमी क्या है और कहाँ स्तिथ है?

(क) दिल्ली में, संगीत और नाटकों का आयोजन करने वाली संस्था।

(ख) दिल्ली में, संगीतकारों एवं नाटककारों का एक संगठन।

(ग) नई दिल्ली में स्तिथ एक विश्वविदयालय।

(घ) नई दिल्ली सिथत संगीत और नाटयकला से संबध्द संस्था।

5. 'खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा।'-प्रस्तुत वाक्य का प्रकार है

(क) सरल वाक्य

(ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्र वाक्य

(घ) असाधारण वाक्य

अथवा

जिस योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग का व सुई-धागे का अविष्कार हुआ, वह व्यक्ति-विशेष की संस्कृति; और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता।

जिस व्यक्ति में पहली चीज, जितनी अधिक व जैसी परिष्कृत मात्रा में होगी, वह व्यक्ति उतना ही अधिक व वैसा ही परिष्कृत आविष्कर्ता होगा। एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज की खोज करता है; किन्तु उसकी संतान को अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है।

1. लेखक के अनुसार व्यक्ति-विशेष की संस्कृति का स्वरुप है-
   (क) व्यक्ति-विशेष द्वारा की गई खोज।
   (ख) व्यक्ति-विशेष द्वारा उपयोगी वस्तुओं अनुसंधान।
   (ग) व्यक्ति-विशेष की उत्कट अभिलाषा जो खोज के लिए प्रेरित करती है।
   (घ) आविष्कार कराने वाली योग्यता और प्रवृत्ति।

2. सभ्यता नाम है उस वस्तु का
   (क) जो खोजी गई है।
   (ख) जो उपयोगी है।
   (ग) जो उपयोगी और संस्कृति द्वारा आविष्कृत है।
   (घ) जो अपने आप में विशिष्ट है।

3. परिष्कृत आविष्कर्ता कौन होता है-

   (क) जो उपयोगी वस्तुओं की खोज करे।

   (ख) जो विशिष्ट पदार्थों का अनुसंधान करे।

   (ग) जो नई-नई खोजों को प्रस्तुत करे।

   (घ) जो पूर्णत: परिष्कृत हो।

4. वास्तविक संस्कृत व्यक्ति कहा जाता है उसको-

   (क) जो उपयोगी वस्तुओं की खोज करे।

   (ख) जो उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करता है।

   (ग) जो पूर्वजों से प्राप्त वस्तुओं का परिष्कार करता है।

   (घ) जो विवेक के आधार पर किसी नए तथ्य का दर्शन करता है।

5. 'एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज की खोज करता है; किन्तु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही हो जाती है।' प्रस्तुत वाक्य का प्रकार है-

   (क) सरल (ख) संयुक्त

   (ग) मिश्र (घ) योजक

प्र. 10. स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते है। - कुतर्कवादियों की इस दलील का खंडन द्विवेदी जी ने कैसे किया, स्पष्ट कीजिए। 4

उत्तर :

________________________________________

________________________________________

________________________________________

________________________________________

प्र. 11. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए : **2 x 3 = 6**

(क) 'एक कहानी यह भी' लेखिका ने अपनी माँ को व्यक्तित्वहीन क्यों कहा है?

उत्तर :

________________________________________

________________________________________

________________________________________

________________________________________

(ख) 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के लेखक ने स्त्री-शिक्षा के विषय में जो विचार प्रकट किए हैंउन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

________________________________________

________________________________________

________________________________________

________________________________________

________________________________________

(ग) किन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

______________________________________________

______________________________________________

______________________________________________

______________________________________________

प्र. 12. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

**1 x 5 = 5**

नाथ संभुधनु  भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।

आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।

सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई।।

सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।

(क) पद्यांश के आधार पर राम के स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

______________________________________________

______________________________________________

(ख) परशुराम ने सेवक और 'शत्रु' किसको कहा है **?**

उत्तर :

_______________________________________________

_______________________________________________

(ग) 'सहसबाहु' कौन था?

उत्तर :

_______________________________________________

_______________________________________________

(घ) इन पंक्तियों से दो तदभव शब्द छाँटकर लिखिए।

उत्तर :

_______________________________________________

_______________________________________________

(ड़) 'सहसबाहु सम सो रिपु मोरा' में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए।

उत्तर :

_______________________________________________

_______________________________________________

अथवा

दुविधा-हत साहस है, दिखता हैपंथ नहीं,

देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।

दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर,

क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर?

जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,

छाया मत छुना

मन, होगा दुख दूना।

(क) इन पंक्तियों में कवि ने किसकी शोभा का वर्णन किया है **?**

उत्तर :

---

---

(ख) इन पंक्तियों का संबंध आधुनिक काल की किस काव्यधारा से है**?**

उत्तर :

---

---

(ग) फागुन में वृक्षों की डालियाँ कैसी लगती हैं **?**

उत्तर :

______________________________________________

______________________________________________

(घ) कवी की आँखे कहाँ से नहीं हट पातीं **?**

उत्तर :

______________________________________________

______________________________________________

**(ड)** इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने क्या सन्देश दिया है**?**

उत्तर :

______________________________________________

______________________________________________

प्र. 13. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : **2 x 5 = 10**

(क) राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में परशुराम ने अपने विषय में क्या कहा

उत्तर :

______________________________________________

______________________________________________

______________________________________________

______________________________________________

(ख) मृगतृष्णा किसे कहते है छाया मत छूना कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है **?**

उत्तर :

(ग) कन्यादान कविता में माँ अपनी बेटी के विषय में क्या कामना करती है **?**

उत्तर :

(घ) “कभी-कभी तारसप्तक की ऊँचाई पर पहुँचकर मुख्य गायक का स्वर बिखरता नजर आता है, उस समय संगतकार उसे बिखरने से बचा लेता है।” इस कथन के आलोक में संगतकार की विशेष भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

(ड) कन्यादान कविता का सन्देश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

प्र.14. साना साना हाथ जोडि रचना प्रदूषण के कारण स्नोफॉल में कभी का जिक्र किया गया है, प्रदूषण के कौन-कौन से दुष्यपरिणाम सामने आए है लिखें। 4

उत्तर :

प्र.15. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : **2 x 3 = 6**

(क) सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन-किन लोंगो का योगदान होता है, उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

(ख) जलाए जाने वाले विदेशी वस्त्रों के ढेर में अधिकांश वस्त्र फटे-पुराने थे परन्तु दुलारी द्वारा विदेशी मिलों में बनी कोरी साडियों का फेंका जाना उसकी किस मानसिकता को दर्शाता है

उत्तर :

(ग) मैं क्यों लिखता हूँ में लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेख्न में कहीं अधिक मदद करती है

उत्तर :

## खंड - घ

प्र. 16. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर निबंध लिखिए :

(क) विदयालय का वार्षिक उत्सव 5

- विदयालय का जीवन, वार्षिक उत्सव का दिन, उत्सव का विवरण, आपकी भूमिका।

(ख) परिश्रम ही जीवन का आाधार

- परिश्रम का महत्व, जीवन में उसकी उपयोगिता, भागयवाद का निराकरण।

प्र. 17. छोटे भाई को पत्र लिखकर मालूम कीजिए कि उसकी पढाई कैसी चल रही है साथ ही उसे पढाई के सम्बंध में कुछ उपयोगी बातें भी बताइए। 5

अथवा

अपने नगर के चिड़ियाघर को देखने पर वहाँ की अव्यवस्था से आपको बहुत दुख हुआ। इस अव्यवस्था के प्रति चिड़ियाघर के निर्देशक का ध्यान आकृष्ट करते हुए एक पत्र लिखिए।

**C.B.S.E**

**कक्षा: 10**

**हिन्दी A – 2012**

**(Outside Delhi)**

**[Summative Assessment II (CCE)]**

**समय: 3 घंटे** **पूर्णांक : 90**

---

## उत्तरकुंजी

**सामान्य निर्देश :**

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं-क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : **1 x 5 = 5**

पाटलिपुत्र पहुँचकर यूनानी दूत मेगास्थनीज आचार्य विष्णुगुप्त से भेंट करने के लिए नगर की सीमा से बाहर स्तिथ उनकी कुटिया पर जब पहुँचा, उस समय शाम ढलने ही वाली थी, अँधेरा छाने लगा था। मेगास्थनीज ने बाहर से ही देखा कि आचार्य अपने आसन पर बैठे कुछ काम करने में लगे हुए है। प्रकाश की व्यवस्था के लिए वहीं रखी एक तिपाई पर दीया जल रहा था। मेगास्थनीज के द्वार के निकट पहुचने पर आचार्य ने उसे भीतर आकर स्थान ग्रहण करने का संकेत किया और स्वयं अपने कार्य में तल्लीन रहे। कुछ समय के उपरांत उन्होंने अपना कार्य समाप्त करके प्रकाशमान दीपक को बुझा दिया और पास ही रखा एक अन्य दीपक जला लिया। मेगास्थनीज सोचने लगा कि जब एक दीपक जल ही रहा था तो आचार्य ने उसे बुझाकर

दूसरा दीपक क्यों जलाया? उससे रहा नहीं गया और उसने आचार्य से इसका कारण पूछ ही लिया। आचार्य ने सहजता से कहा, ‘ तुम जब यहाँ आए, तब मैं जो काम कर रहा था, वह राज्य-व्यवस्था से सम्बंधित था और तब जो दीपक जल रहा था, उसका खर्च शासन-तंत्र उठाता है। लेकिन अब चूँकि वह कार्य समाप्त हो गया, इसलिए मैंने वह दीपक बुझा दिया। अभी जो दीपक जला रखा है उसके खर्च का वहन मैं अपनी आय से करता हूँ। मैं अपने व्यक्तिगत कार्य के लिए राज्य के संसाधन का दुरुपयोग कैसे कर सकता हूँ?’

मेगास्थनीज ने नैतिक जवाबदेही का ऐसा उदाहरण ओर कहीं नहीं देखा था। वह समझ गया कि मौर्य-शासन का भविष्य उज्ज्वल है।

1. आचार्य विष्णुगुप्त कहाँ रहते थे

    (क) पाटलिपुत्र के भव्य भवन में।  (ख) गाँव की एक मामूली झोपड़ी में।

    (ग) <u>नगर की सीमा से बाहर कुटिया में।</u> (घ) गंगातट पर बने आश्रम में।

2. मेगास्थनीज की सोच का कारण था-

    (क) विष्णुगुप्त का कुटिया में निवास करना।

    (ख) उनका अत्यन्त व्यस्त रहना।

    (ग) <u>एक दीपक बुझाकर अन्य दीपक जलाना।</u>

    (घ) अपने कार्य को समय पर निबटाना।

3. मेगास्थनीज ने आचार्य से क्या पूछा?

    (क) उनके स्वास्थ्य की कुशल।    (ख) <u>दूसरा दीपक जलाने का कारण।</u>

    (ग) राज्य-व्यवस्था के बारे में।    (घ) राज्य की प्रजा के विषय में।

4. दीपक की घटना संदेशवाहक है-

(क) प्रशासक की कर्मठता की।

(ख) <u>प्रशासक की नैतिक जवाबदेही की।</u>

(ग) प्रशासक की कुशल प्रशासन शैली की।

(घ) राज्य के प्रति प्रशासकीय निष्ठा की।

5. 'दुरुपयोग शब्द' में उपसर्ग है-

(क) दु (ख) <u>दुर</u>

(ग) दुरु (घ) दूर

प्र. 2. प्रस्तुत गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : **1 x 5 = 5**

जीवन का कोई भी रास्ता सफल अथवा निर्बाध नहीं होता। कामयाबी के हर रास्ते में कई मुश्किलों का आना तय है। हर बड़ी सफलता के पीछे अनेक छोटी-छोटी असफलताएँ छिपी रहती हैं।

किसी बडे पत्थर के टुकड़े करने के लिए हमें उस पर असंख्य प्रहार करने पडते है। अंत में एक प्रहार ऐसा होता है कि वह पत्थर को दो टुकड़ो में बाँट देता है। लेकिन क्या अंतिम प्रहार पहले किए गए प्रहार से पहले किए गए सारे प्रहार निरर्थक थे? नहीं। ऊपर से बेशक पहले का हर प्रहार निरर्थक लगता हो लेकिन हर प्रहार पूरी तरह सार्थक था क्योंकि उन प्रहारों में ही बेशक पहले का हर प्रहार निरर्थक लगता हो लेकिन हर प्रहार पूरी तरह सार्थक था क्योंकि उन प्रहारों में ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी हुई थी। हर चोट ने निरंतर उस पत्थर को टूटने के अधिकाधिक निकट ला दिया था। वास्तव में थोडी-बहुत असफलताओं के बिना सफलता संभव ही नहीं।

व्यक्ति अपनी सफलताओं की बजाय असफलताओं से सीखता है। हर असफलता से उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर मिलता है। सफलता के बाद हम कभी अपना पुनर्मूल्यांकन नही करते। समस्या आए बगैर हम रास्ता नहीं खोजते। समस्याएँ ही हमें उपाय खोजने के लिए प्रेरित करती है, हमें चिंतनशील बनाती हैं, हममें धैर्य का विकास करती हैं। ठोकर खाने के बाद ही हम अपनी असफलता का कारण जानने का प्रयास करते है। उसके बाद ही नए सिरे से आगे बढ़ने के लिए अपनी क्षमता का विकास करते हैं। जीवन की हर असफलता किसी बड़ी सफलता का आधार बनती है।

1. बड़ी सफलता के पीछे असफलताएँ छिपी रहती हैं, क्योंकि
   (क) दुनिया में फूलों के साथ काँटे भी होते हैं।
   (ख) रुकावटों को हटाकर ही आगे बढ़ा जाता है।
   (ग) <u>जीवन का कोई भी मार्ग बाधा रहित नहीं होता।</u>
   (घ) प्रत्येक कार्य में रुकावटें किसी-न-किसी रुप में आती ही हैं।

2. पत्थर पर पड़ने वाले असंख्य प्रहार सिद्ध करते हैं कि
   (क) छोटी-छोटी असफलताओं को जीतकर ही बड़ी सफलता मिलती है।
   (ख) बड़ा पत्थर लगातार छोटे प्रहारों से ही टूटता है।
   (ग) <u>उन पर ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी है।</u>
   (घ) पत्थर बड़े प्रहार से नहीं टूट सकता।

3. व्यक्ति सफलताओं की बजाय असफलताओं से अधिक सीखता है, क्योंकि
   (क) असफलताएँ उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर देती हैं।
   (ख) सफलताएँ यह अवसर नहीं देतीं।

(ग) <u>सफलता प्राप्ति पर व्यक्ति निश्चिंत हो जाता है।</u>

(घ) असफलताएँ उसको सफलता के लिए प्रेरित करती हैं।

4. गद्याश का उपयुक्त शीर्षक है

(क) सफलता का मार्ग

(ख) सफलता और असफलता

(ग) असफलताओं से प्रेरणा

(घ) <u>असफलता सफलता का आधार</u>

5. 'आधार' का पर्यायवाची शब्द है

(क) धारदार

(ख) स्तर

(ग) <u>बुनियाद</u>

(घ) जड

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : **1 x 5 = 5**

मान लूँ मैं हार कैसे
रोकना मुझको असंभव रुप की मदिरा पिलाकर,
ईंट-पत्थर औरे काँटे राह में मेरी बिछाकर,
रुक नहीं सकता कदम गर उठ गया जलती चिता पर,
उठ गया तो क्या चिता, शव उठ चलेगा साथ पथ पर,
सौंप दूँ दुर्भाग्य को अपना मनुज-अधिकार कैसे?
आज अंतर-प्यास मेरी रस नहीं, विष चाहती है,
दग्ध प्राणों में प्रलय की गूँज भरना चाहती है।
चाहता मन सिंधु-नभ-थल-गिरी-अतल को जीत लेना,

जिंन्दगी मेरी कहीं पर भी न रुकना चाहती है,
मैं मरुस्थल का पथिक हूँ, सींच दूँ रसधार कैसे?

1. लक्ष्य की ओर बढ़ते पथिक के मार्ग में बाधक नहीं है
   (क) रुप की मदिरा।
   (ख) मार्ग की बाधाएँ।
   (ग) <u>दुर्भाग्य का अभिशाप।</u>
   (घ) जलती चिता।

2. अपराजेय पथिक हार न मानता हुआ चाहता है
   (क) मदिरा द्वारा अन्तर की प्यास बुझाना।
   (ख) उत्साही जीवन में विनास की हुंकार भरना।
   (ग) <u>मार्ग की बाधाओं को हटाना।</u>
   (घ) विजय के मार्ग को प्रशस्त करना।

3. पथिक किस पर विजय प्राप्त करना चाहता है
   (क) पथ की बाधाओं पर।
   (ख) मरुभूमि जैसे रसहीन जीवन पर।
   (ग) <u>सागर, आकाश, भूमि और पर्वत पर।</u>
   (घ) गतिहीन जीवन पर।

4. 'मैं मरुस्थल का पथिक हूँ' पंक्ति का आशय है
   (क) मैं रेतीले मैदान का बटोही हूँ।
   (ख) मैं युध्दस्थली का योध्दा हूँ।
   (ग) <u>मैं कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलने का आदी हूँ।</u>
   (घ) गतिहीन जीवन पर।

5. मनुज-अधिकार में समास है

(क) द्विगु

(ख) कर्मधारय

(ग) <u>तत्पुरुष</u>

(घ) बहुव्रीहि

प्र. 4. नीचे लिखे पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : **1 x 5 = 5**

धूप की तपन खुद सहने
छाँव सबको देने का प्रण
पेडों ने लिया,
धूप ने बदले में
फूलों को रंगीन
पेड़ों को हरा-भरा कर दिया।
हजारों मील चलकर
गई थीं जो नदियाँ
और मीठा पानी खारी समंदर को दिया
बदल गया इतना मन समंदर का
रख लिया खारीपन पास अपने
और बादलों के हाथ
भेजा मीठे जल का तोहफा
नदियों को फिर जिसने भर दिया।

1. पेड़ों की प्रतिज्ञा है

(क) सबको फल देना। (ख) धूप की तपन लेना।

(ग) स्वयं कष्ट उठाकर सुख देना। (घ) संसार का हित करना।

2. बदले में धूप पेड़ों को देती है

(क) शीतल छाया। (ख) फुलों की सुगंध।

(ग) पत्तोकी हरियाली। (घ) शाखाओं की मजबूती।

3. नदियाँ हजारों मील किसलिए चलती हैं?

(क) प्राणियों की प्यास बुझाने के लिए।

(ख) भूमि को उर्वर बनाने के लिए।

(ग) सागर को मीठा जल देने के लिए।

(घ) मरुस्थल को सरस बनाने के लिए।

4. सागर नदियों का ऋण चुकाता है

(क) उनके मीठेपानी को स्वीकार कर।

(ख) उनके खारी जल का उपहार देकर।

(ग) मेघों के माध्यम से मीठा जल भेजकर।

(घ) नदियों की बाढ़ का कारण बनकर।

5. कविता का संदेश है

(क) जैसे के साथ तैसा व्यवहार।

(ख) अपकारी के प्रति उपकार का भाव।

(ग) उपकारी के प्रति गहन कृतज्ञता।

(घ) कृतघ्नता का अभिशाप।

## खंड - ख

प्र. 5. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांक्ति शब्दों का पद-परिचय दीजिए : **1 x 5 = 5**

1. उसने उनके <u>अनुकरणीय</u> जीवन को नमन किया।

   उत्तर : अनुकरणीय-विशेषण, गुणवाचक,पुल्लिंग, एकवचन।

2. उन्होंने <u>श्रध्दांजलि</u> अर्पित की।

   उत्तर : श्रध्दांजलि-संज्ञा, भाववाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन।

3. वे माँ की स्मृति में <u>अक्सर</u> डूब जाते।

   उत्तर : अक्सर- क्रियाविशेषण, कालवाचक, डूब जाते का विशेषण।

4. <u>जैसा</u> करोगे, वैसा भरोगे।

   उत्तर : जैसा-सर्वनाम, संबंधवाचक, पुल्लिंग, एकवचन।

5. <u>प्रिया</u>। तुम सचमुच बहुत अच्छी हो।

   उत्तर : प्रिया। संज्ञा, व्यक्तिवाचक, कर्ता, स्त्रीलिंग, एकवचन।

प्र. 6. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए : **1 x 5 = 5**

1. वे भारत आए और 73 वर्ष की जिंदगी जीकर स्वर्गवासी हो गए (सरल वाक्य में)

   उत्तर : वे भारत आकर 73 वर्ष की जिंदगी जीकर स्वर्गवासी हो गए।

2. हमारी गोष्ठियों में वे गम्भीर बहस करते। (सतल वाक्य में)

   उत्तर : वे जब भी हमारी गोष्ठियों में आते गम्भीर बहस करते।

3. स्वास्थ्य ठीक होने पर मैं भी आपके साथ चलता। (संयुक्त वाक्य में)

उत्तर : मैं भी आपके साथ चलता किन्तु मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है।

4. छोटे होने पर मैं खूब साइकिल चलाता था। ( मिश्र वाक्य में)

उत्तर : जब मैं छोटा था तब साइकिल खूब  चलाता था।

5. यदि इस बार वर्षा न हुई तो सारी फसल नष्ट हो जाएगी। (सरल वाक्य में)

उत्तर : वर्षा न होने पर इस बार सारी फसल नष्ट हो जाएगी।

प्र. 7. निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य परिवर्तन कीजिए : **1 x 5 = 5**

1. बालक पत्र लिखता है। (कर्मवाच्य)

उत्तर : बालक से पत्र लिखा जाता है।

2. बच्चों से खेला जाएगा। (कर्तृवाच्य में)

उत्तर : बच्चे खेलेंगे।

3. मैंने खाना खाया। (कर्मवाच्य में)

उत्तर : मुझसे खाना खाया गया।

4. राम नहीं सोता। (भाववाच्य में)

उत्तर : राम से सोया नहीं जाता।

5. बच्चे जगह-जगह पेड़ लगा रहे हैं। (कर्मवाच्य में)

उत्तर : बच्चों द्‌वारा जगह-जगह पेड़ लगाए जा रहे है।

प्र. 8. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए : **1 x 5 = 5**

1. नीलकमल-सी आँखें उसकी, आज न जाने क्या-क्या कह गईं।

   उत्तर : उपमा अलंकार

2. पाकर प्रथम प्रेम भरी पाती प्यारी प्रियतम की।

   उत्तर : अनुप्रास अलंकार

3. ऊषा सुनहले तीर बरसाती जय लक्ष्मी-सी उदित हुई।

   उत्तर : मानवीकरण अलंकार

4. मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों।

   उत्तर : रुपक अलंकार

5. पानी गए न ऊबरे मोती मानुस चून।

   उत्तर : श्लेष अलंकार

## खंड - ग

प्र. 9. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प छाँटकर लिखिए : **1 x 5 = 5**

भारतरत्न से लेकर इस देश के ढ़ेरों विश्वविदयालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत वह संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पदमविभूषण जैसे सम्मानों से नही, बल्कि अपनी अजेय संगीतयात्रा के लिए बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे। नब्बे वर्ष की भरी-पूरी आयु में 21 अगस्त, 2006 को संगीत-रसिकों की हार्दिक सभा से विदा हुए खाँसाहब की सबसे की सबसे बड़ी  देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा।

1. बिस्मिल्ला खाँ को प्राप्त सर्वोच्च सम्मान था ।
   (क) पदमविभूषण।
   (ख) संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार।
   (ग) विश्वविदयालयों की मानद उपाधियाँ।
   (घ) <u>भारतरत्न।</u>

2. बिस्मिल्ला खाँ हमेशा के लिए संगीत के नायक क्यों बने रहेंगें?
   (क) शहनाई की जादुई आवाज के कारण।
   (ख) सातों सुरों को बरतने की तमीज के कारण।
   (ग) भाईचारे की भावना को मजबूत करने के कारण।
   (घ) <u>अजेय संगीतयात्रा के कारण।</u>

3. बिस्मिल्ला खाँ की सबसे बड़ी देन है

   (क) संगीत-रसिकों को रसविभोर करना।

   (ख) संगीत की शास्त्रीय परम्परा को जागृत रखना।

   (ग) संगीत की पूर्णता एवं ज्ञान की इच्छा को जीवन-भर सँजोए रखना।

   (घ) एक सच्ची इन्सानियत का उदाहरण पेश करना।

4. संगीत नाटक अकादमी क्या है और कहाँ स्तिथ  है?

   (क) दिल्ली में, संगीत और नाटकों का आयोजन करने वाली संस्था।

   (ख) दिल्ली में, संगीतकारों एवं नाटककारों का एक संगठन।

   (ग) नई दिल्ली में स्तिथ एक विश्वविदयालय।

   (घ) नई दिल्ली सिथत संगीत और नाटयकला से संबध्द संस्था।

5. 'खाँ साहब की सबसे बडी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा।'-प्रस्तुत वाक्य का प्रकार है

   (क) सरल वाक्य

   (ख) संयुक्त वाक्य

   (ग) मिश्र वाक्य

   (घ) असाधारण वाक्य

अथवा

जिस योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग का व सुई-धागे का अविष्कार हुआ, वह व्यक्ति-विशेष की संस्कृति; और उस संस्कृति द्वारा जो  आविष्कार हुआ, जो चीज उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता।

जिस व्यक्ति में पहली चीज, जितनी अधिक व जैसी परिष्कृत मात्रा में होगी, वह व्यक्ति उतना ही अधिक व वैसा ही परिष्कृत आविष्कर्ता होगा। एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज की खोज करता है; किन्तु उसकी संतान को अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है।

1. लेखक के अनुसार व्यक्ति-विशेष की संस्कृति का स्वरुप है-
   (क) व्यक्ति-विशेष द्वारा की गई खोज।
   (ख) व्यक्ति-विशेष द्वारा उपयोगी वस्तुओं अनुसंधान।
   (ग) व्यक्ति-विशेष की उत्कट अभिलाषा जो खोज के लिए प्रेरित करती है।
   (घ) <u>आविष्कार कराने वाली योग्यता और प्रवृत्ति।</u>

2. सभ्यता नाम है उस वस्तु का
   (क) जो खोजी गई है।
   (ख) जो उपयोगी है।
   (ग) <u>जो उपयोगी और संस्कृति द्वारा आविष्कृत है।</u>
   (घ) जो अपने आप में विशिष्ट है।

3. परिष्कृत आविष्कर्ता कौन होता है-

(क) जो उपयोगी वस्तुओं की खोज करे।

(ख) जो विशिष्ट पदार्थों का अनुसंधान करे।

(ग) <u>जो नई-नई खोजों को प्रस्तुत करे।</u>

(घ) जो पूर्णत: परिष्कृत हो।

4. वास्तविक संस्कृत व्यक्ति कहा जाता है उसको-

(क) जो उपयोगी वस्तुओं की खोज करे।

(ख) जो उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करता है।

(ग) जो पूर्वजों से प्राप्त वस्तुओं का परिष्कार करता है।

(घ) <u>जो विवेक के आधार पर किसी नए तथ्य का दर्शन करता है।</u>

5. 'एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज की खोज करता है; किन्तु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही हो जाती है।' प्रस्तुत वाक्य का प्रकार है-

(क) सरल (ख) <u>संयुक्त</u>

(ग) मिश्र (घ) योजक

प्र. 10. स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते है। - कुतर्कवादियों की इस दलील का खंडन द्विवेदी जी ने कैसे किया, स्पष्ट कीजिए। 4

उत्तर : द्विवेदी जी ने स्त्री-शिक्षा विरोधी कुतर्कों का खंडन करने के लिए व्यंग्य का सहारा लिया है। महावीरप्रसाद द्विवेदी जी का लिखा लेख 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' सशक्त लेखन का परिचय है। स्त्री शिक्षा से सम्बन्धित कुछ व्यंग्य जो द्विवेदी जी द्वारा दिए गए हैं -

1 पढ़ने लिखने में स्वयं कोई बात ऐसी नहीं जिससे अनर्थ हो सके । अनर्थ का बीज उसमें हरगीज़ नहीं।अनर्थ पुरुषों से भी होते हैं।अपढ़ों और पढ़ें लिखों, दोनों से।

2 स्त्रियों का किया हुआ अनर्थ यदि पढ़ाने ही का परिणाम है तो पुरुषों का किया हुआ अनर्थ भी उनकी विद्या और शिक्षा का ही परिणाम समझना चाहिए।

3 शकुंतला इतना कम पढ़ी थी कि मुश्किल से एक श्लोक लिख सकी थी।तिस पर भी उसकी इतनी कम शिक्षा ने भी अनर्थ कर डाला। शकुंतला ने जो कटु वाक्य दुष्यंत को कहे, वह इस पढ़ाई का ही दुष्परिणाम था।क्या उसे दुष्यंत की अस्वाभाविकता पर यह कहना चाहिए था "आर्य पुत्र, शाबाश। बड़ा अच्छा काम किया जो मेरे साथ गांधर्व-विवाह करके मुकर गए। नीति, न्याय, सदाचार और धर्म की आप प्रत्यक्ष मूर्ति हैं।"

4 स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का घूँट। ऐसी ही दलीलों और दृष्टांतो के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अपढ़ रखकर भारतवर्ष का गौरव बढ़ाना चाहते हैं।

प्र. 11. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए : **2 x 3 = 6**

(क) 'एक कहानी यह भी' लेखिका ने अपनी माँ को व्यक्तित्वहीन क्यों कहा है?

उत्तर : लेखिका की माँ अशिक्षित एवं घरेलू महिला थीं। लेखिका के माँ के साथ लेखिका के पिताजी का व्यवहार अच्छा नहीं था। वे पूरी तरह से अपने पति के अधीन थीं तथा सदैव उनसे भयभीत रहती थीं। वे कभी पति से लडाई-झगडा नहीं करती थीं। यही नहीं वे अपने पति की अनुचित डाँट-फटकार का भी कभी प्रतिरोध नहीं करती थीं। स्त्री के प्रति ऐसे व्यवहार को लेखिका कभी भी उचित नहीं समझती थी। अपने माँ के प्रति ऐसा व्यवहार लेखिका को उनके पिताजी का ज़्यादती लगता था। उनकी सारी जिंदगी पति की डाँट-फटकार सुनते तथा अपने बच्चों की माँगों को पूरा करते गुजरी थी। इसप्रकार लेखिका के जीवन में उसके माँ का व्यक्तित्व का कोई विशेष प्रभाव न पड़ सका। इसलिए लेखिका उन्हें व्यक्तित्वहीन कहती है।

(ख) 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के लेखक ने स्त्री-शिक्षा के विषय में जो विचार प्रकट किए हैं उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : महावीरप्रसाद जी ने इस लेखक को लिखकर उस समय के ऐसे पुरातन पंथियों से लोहा लिया है, जिनसे उलझना स्वयं को चोट पहुँचाने के समान है। परन्तु उन्होंने निष्ठा, निडरता और साहस के साथ स्त्रियों को शिक्षा के अधिकार से वंचित करने वालों को मुँहतोड़ जवाब दिया है। वहीं उन्होंने पुरानी हो चुकी परंपराओं

के स्थान पर नई सोच को अपनाकर समाज को बदलने के लिए भी प्रेरित किया है।

1 जो लोग यह कहते हैं कि पुराने ज़माने में स्त्रियाँ नहीं पढ़ती थीं। वे या तो इतिहास से अनभिज्ञ हैं या फिर समाज के लोगों को धोखा देते हैं।

2 प्राचीन काल में भी स्त्रियाँ शिक्षा ग्रहण कर सकती थीं। सीता, शकुंतला, रुकमणी, आदि महिलाएँ इसका उदाहरण हैं। वेदों, पुराणों में इसका प्रमाण भी मिलता है।

3 यदि गृह कलह स्त्रियों की शिक्षा का ही परिणाम है तो मर्दों की शिक्षा पर भी प्रतिबंध लगाना चाहिए। क्योंकि चोरी, डकैती, रिश्वत लेना, हत्या जैसे दंडनीय अपराध भी मर्दों की शिक्षा का ही परिणाम है।

4 प्राचीन युग में अनेक पदों की रचना भी स्त्री ने की है।

5 पढ़ने लिखने में स्वयं कोई बात ऐसी नहीं जिससे अनर्थ हो सके । अनर्थ का बीज उसमें हरगीज़ नहीं। अनर्थ पुरुषों से भी होते हैं।अपढ़ों और पढ़े लिखों, दोनों से।

6 अगर ऐसा था भी कि पुराने ज़माने की स्त्रियों की शिक्षा पर रोक थी तो उस नियम को हमें तोड़ देना चाहिए क्योंकि ये समाज की उन्नति में बाधक है।

(ग) किन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : सुई-धागे का आविष्कार शरीर को ढ़कने तथा सर्दियों में ठंड से बचने के उद्देश्य से हुआ होगा। कपड़े के दो टुकडों को एक करके जोड़ने के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा।

प्र. 12. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **1 x 5 = 5**

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।

(क) पद्यांश के आधार पर राम के स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : श्रीराम अपने से बड़ों का सदैव सम्मान करते हैं। श्रीराम अत्यंत विनयशील तथा संयमी हैं। परशुराम जी द्वारा कटु वचनों का प्रयोग करने के बाद भी वे बडी विनम्रता से उनको सुनते हैं। वे परशुराम जी का अत्यन्त सम्मान करते हैं तथा स्वयं को उनका दास कहते हैं।

(ख) परशुराम ने सेवक और 'शत्रु' किसको कहा है **?**

उत्तर : परशुराम जी कहते हैं कि सेवक वह होता है जो सेवा करता है। वह यह भी कहते हैं कि शिवधनुष को तोड़ने वाला व्यक्ति उनका शत्रु है।

(ग) 'सहसबाहु' कौन था?

उत्तर : 'सहसबाहु' अथवा सहस्रबाहु एक क्षत्रिय राजा था। जिसका परशुराम जी ने वध किया था।

(घ) इन पंक्तियों से दो तद्भव शब्द छाँटकर लिखिए।

उत्तर : तदभव शब्द- 1. कोही, 2. सहसबाहु।

(ड़) 'सहसबाहु सम सो रिपु मोरा' में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए।

उत्तर : 'सहसबाहु सम सो रिपु मोरा' में उपमा अलंकार है।

अथवा

दुविधा-हत साहस है, दिखता हैपंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) इन पंक्तियों में कवि ने किसकी शोभा का वर्णन किया है **?**

उत्तर : इस पंक्तियों में कवि ने फागुन की शोभा का वर्णन किया है।

(ख) इन पंक्तियों का संबंध आधुनिक काल की किस काव्यधारा से है**?**

उत्तर : इन पंक्तियों का संबंध आधुनिक काल की छायावाद काव्यधारा से है।

(ग) फागुन में वृक्षों की डालियाँ कैसी लगती हैं **?**

उत्तर : फागुन में वृक्षों की डालियाँ हरी एवं लाल पत्तियों से लदी हुई दिखाई देती है।

(घ) कवि की आँखे कहाँ से नहीं हट पातीं **?**

उत्तर : कवि की आँखें फागुन महीने में प्रकुति की शोभा से नहीं हट पातीं।

(ड) इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने क्या सन्देश दिया है**?**

उत्तर : कवि ने इस काव्य द्वारा अपने अतीत को भूलकर भविष्य की ओर उन्नति के पथ पर अग्रसर होने का संदेश दिया है।

प्र. 13. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : **2 x 5 = 10**

(क) राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में परशुराम ने अपने विषय में क्या कहा

उत्तर : परशुराम ने अपने विषय में ये कहा कि वे बाल ब्रह्मचारी हैं और क्रोधी स्वभाव के हैं। समस्त विश्व में क्षत्रिय कुल के विद्रोही के रुप में विख्यात हैं। उन्होंने अनेकों बार पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन कर इस पृथ्वी को ब्राह्मणों को दान में दिया है और अपने हाथ में धारण इस फरसे से सहस्त्रबाहु के बाहों को काट डाला है। इसलिए हे नरेश पुत्र। मेरे इस फरसे को भली भाँति देख ले।राजकुमार। तू क्यों अपने माता-पिता को सोचने पर विवश कर रहा है। मेरे इस फरसे की भयानकता गर्भ में पल रहे शिशुओं को भी नष्ट कर देती है।

(ख) मृगतृष्णा किसे कहते है छाया मत छूना कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है **?**

उत्तर : मृगतृष्णा दो शब्दों से मिलकर बना है मृग व तृष्णा। इसका अर्थ है आँखों का भ्रम अर्थात् जब कोई चीज़ वास्तव में न होकर भ्रम की स्थिति बनाए, उसे मृगतृष्णा कहते हैं। इसका प्रयोग कविता में प्रभुता की खोज में भटकने के संदर्भ में हुआ है। इस तृष्णा में फँसकर मनुष्य हिरन की भाँति भ्रम में पड़ा हुआ भटकता रहता है।

(ग) कन्यादान कविता में माँ अपनी बेटी के विषय में क्या कामना करती है ?

उत्तर : माँ अपनी लड़की के विषय में यह कामना करती है कि वह ससुराल में समझदारी से काम ले।अपने ऊपर होने वाले हर अन्याय और अत्याचार से बचे और हमेशा अपने जीवन में सुखी रहे। वह सरलता, भोलेपन और सौंदर्य के कारण बंधनों में न बँधे।

(घ) "कभी-कभी तारसप्तक की ऊँचाई पर पहुँचकर मुख्य गायक का स्वर बिखरता नजर आता है, उस समय संगतकार उसे बिखरने से बचा लेता है।" इस कथन के आलोक में संगतकार की विशेष भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कभी-कभी तारसप्तक की ऊँचाई पर पहुँचकर मुख्य गायक का स्वर बिखरता नजर आता है, उस समय संगतकार अपनी स्वर लहरी बिखेर देता है और गायक के स्वर में आई रिक्तता को भर देता है।संगतकार उसकी प्रेरणा व हिम्मत बन जाता है जिससे मुख्य गायक में नया जोश भर जाता है।

(ड) कन्यादान कविता का सन्देश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कन्यादान कविता में नारी-जागृति से संबंधित है। यह कविता नारी की समाज में जो दयनीय स्थिति उसकी ओर संकेत करती है।नारी पर आदर्श के नाम पर बंधन लगाए जाते है व पुरुषों से अलग लड़की के लिए आचरण संबंधी प्रतिमान गढ़ दिए जाते है।यदि नारी सरलताए भोलेपन और सौंदर्य के कारण बंधनों में न बँधे तो वह शक्तिशाली बन सकती है।

प्र.14. साना साना हाथ जोडि रचना प्रदूषण के कारण स्नोफॉल में कभी का जिक्र किया गया है, प्रदूषण के कौन-कौन से दुष्यपरिणाम सामने आए है लिखें। 4

उत्तर : आज की पीढ़ी के द्वारा प्रकृति को प्रदूषित किया जा रहा है। प्रदूषण का मौसम पर असर साफ दिखाई देने लगा है। प्रदूषण के कारण वायुमण्डल में कार्बनडाइआक्साइड की अधिकता बढ़ गई है जिसके कारण वायु प्रदूषित होती जा रही है। इससे साँस की अनेकों बीमारियाँ उत्पन्न होने लगी है। जलवायु पर भी इसका बुरा प्रभाव देखने को मिल रहा है जिसके कारण कहीं पर बारिश की अधिकता हो जाती है तो किसी स्थान पर सूखा पड़ जाता है। कहीं पर बारिश नाममात्र की होती है जिस कारण गर्मी में कमी नहीं होती। गर्मी के मौसम में गर्मी की अधिकता देखते बनती है। कई बार तो पारा अपने सारे रिकार्ड को तोड़ चुका होता है। सर्दियों के समय में या तो कम सर्दी पड़ती है या कभी सर्दी का पता ही नहीं चलता। ये सब प्रदूषण के कारण ही सम्भव हो रहा है। ध्वनि प्रदूषण से मनुष्य में कान सम्बन्धी रोग हो रहे हैं। जलप्रदूषण के कारण स्वच्छ जल पीने को नहीं मिल पा रहा है और पेट सम्बन्धी अनेकों बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

प्र.15. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : **2 x 3 = 6**

(क) सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन-किन लोंगो का योगदान होता है, उल्लेख कीजिए।

उत्तर :सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव कराने में सबसे बड़ा हाथ एक कुशल गाइड का होता है। जो अपनी जानकारी व अनुभव से सैलानियों को प्रकृति व स्थान के दर्शन कराता है। कुशल गाइड इस बात का ध्यान रखता है कि भ्रमणकर्ता की रूचि पूरी यात्रा में बनी रहे ताकि भ्रमणकर्ता के भ्रमण करने का प्रयोजन सफल हो। अपने मित्रों व सहयात्रियों का साथ पाकर यात्रा और भी रोमांचकारी व आनन्दमयी बन जाती है।वहाँ के स्थानीय निवासियों व जन जीवन का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। उनके द्वारा ही इस छटा के सौंदर्य को बल मिलता है क्योंकि यदि ये ना हों तो वो स्थान नीरस व बेजान लगने लगते हैं।

(ख) जलाए जाने वाले विदेशी वस्त्रों के ढेर में अधिकांश वस्त्र फटे-पुराने थे परन्तु दुलारी द्वारा विदेशी मिलों में बनी कोरी साड़ियों का फेंका जाना उसकी किस मानसिकता को दर्शाता है

उत्तर : विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार हेतु चलाए जा रहे आन्दोलन में दुलारी ने अपना योगदान रेशमी साड़ी व फेंकू द्वारा दिए गए रेशमी साड़ी के बंडल को देकर दिया। बेशक वह प्रत्यक्ष रूप में आन्दोलन में भाग नहीं ले रही थी फिर भी अप्रत्यक्ष रूप से उसने अपना योगदान दिया था। यह दर्शाता है कि वह एक सच्ची हिन्दुस्तानी है, जिसके हृदय में देश के प्रति प्रेम व आदरभाव है। देश के आगे उसके लिए साड़ियों का कोई मूल्य नहीं है। वस्त्र तो घर-घर से फेंके गए थे पर वो सारे वस्त्र या तो पुराने थे या तो गिसे हुए या फटे हुए थे। परन्तु उसके वस्त्र बिलकुल नए थे। उसके हृदय में उन रेशमी साड़ियों का

मोह नहीं था। मोह था तो अपने देश के सम्मान का। वह उसकी सच्चे देश प्रेमी की मानसिकता को दर्शाता है।

(ग) मैं क्यों लिखता हूँ में लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है?

उत्तर : लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव वह होता है। तो हम घटित होते हुए देखते हैंय परन्तु अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य को आत्मसात् कर लेते हैं, यह वास्तव में कृतिकार के साथ घटित नहीं होता है। वह आँखों के आगे नहीं आया होता अनुभव की तुलना में अनुभूति उसके हृदय के सारे भावों को बाहर निकालने में उसकी मदद करती है। जब तक हृदय में अनुभूति न जागे लेखन का कार्य करना संभव नहीं है। क्योंकि यही हृदय में संवेदना जागृत करती है और लेखन के लिए मजबूर करती है। लेखक अपनी आंतरिक विवशता के कारण लिखने के लिए प्रेरित होता है। उसकी अनुभूति उसे लिखने के लिए प्रेरित करती है व स्वयं को जानने के लिए भी वह लिखने के लिए प्रेरित होता है। इसलिए लेखक, लेखन के लिए अनुभूति को अधिक महत्व देता है।

## खंड - घ

प्र. 16. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर निबंध लिखिए : 5

(क) विदयालय का वार्षिक उत्सव

- विदयालय का जीवन, वार्षिक उत्सव का दिन, उत्सव का विवरण, आपकी भूमिका।

विद्यालय अर्थात्+आलय यानी विद्या का घर। मैं गांधी माध्यमिक विद्यालय में पढ़ता हूं। यह नगर के मध्य नई सड़क पर स्थित है। मेरे विद्यालय का भवन नवनिर्मित है अत: भव्य और सर्वसुविधाओं से युक्त है। सभी गुरुजन विद्वान, परिश्रमी एवं छात्रों को हर समय मार्गदर्शन देते हैं। हमारे विद्यालय में अध्ययन के अतिरिक्त अन्य कार्यक्रम भी होते हैं। हर शनिवार को बालसभा होती है। गांधी जयंती, तुलसी जयंती, हिन्दी दिवस, बाल दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि मनाए जाते हैं। बाल फिल्म एवं प्रकृति निरीक्षण हेतु ले जाया जाता है। खेलकूद, साहित्यिक प्रतियोगिताएँ होती हैं। विजेताओं को शाला के वार्षिक उत्सव में पुरस्कार दिए जाते हैं।

इस बार के वार्षिक उत्सव की योजना छात्रों और अध्यापककों के साथ मिलकर बनाई थी। छात्रों में से कुछ खास करबत दिखाने वाले चुने गए। मैंने मंच-सज्जा की तैयारी की ।कुछ छात्रों ने मिलकर नृत्य और संगीत का कार्यक्रम बनाया।एक माह की तैयारी के बाद वार्षिक उत्सव का दिन आया। मुख्य अतिथि के रुप में शिक्षा मंत्री पधारे थे।स्वागत गान, शास्त्रीय नृत्य, करबत आदि होने के बाद मंत्रीजी ने विद्यार्थियोंको विविध पुरस्कार प्रदान किए।

राष्ट्रीय गीत जन-मन-गण की धुन बजायी गई। इस प्रकार यह उत्सव धूमधाम और उत्साह से समाप्त हुआ।

(ख) परिश्रम ही जीवन का आधार

- परिश्रम का महत्व, जीवन में उसकी उपयोगिता, भागयवाद का निराकरण।

  परिश्रम का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। मनुष्य परिश्रम के द्वारा कठिन से कठिन कार्य सिद्ध कर सकता है। परिश्रम अर्थात् मेहनत के ही द्वारा मनुष्य अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। हर मानव की कुछ इच्छाएँ व आवश्यकतायें होती हैं। वह सुख शान्ति की कामना करता है, दुनियाँ में नाम की इच्छा रखता है।किन्तु कल्पना से ही सब कार्य सिद्ध नहीं हो जाते, उसके लिए हमें कठिन परिश्रम का सहारा लेना पड़ता है।

  परिश्रम के बल पर मानव अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है। परिश्रम के ही बल पर मनुष्य अपना भाग्य बना सकता है। परिश्रम केवल अकेले मनुष्य के लिए ही नहीं लाभदायक होता है। हम देख सकते हैं, कि जिस देश के लोग परिश्रमी होते हैं, वह पूरा देश तरक्की प्राप्त करता है। अमरीका, चीन, रूस और जापान, इसके उदहरण हैं। छात्रों के जीवन में तो परिश्रम का बहुत अधिक महत्त्व होता है। मानव का शारीरिक व मानसिक विकास भी परिश्रम पर निर्भर करता है। आधुनिक मनुष्य वैज्ञानिक यंत्रों का पुजारी बनता जा रहा है।परिश्रम की ओर से लापरवाही इसमें घर करती जा रही हैं। नैतिक पतन हो रहा है जिससे अशांति फैलती जा रही है। फलस्वरूप समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए भी परिश्रम आवश्यक है।

  कुछ लोग सफ़लता का राज़, परिश्रम की जगह भाग्य को मानते हैं। उनका कहना होता है, कि भाग्य में जो लिखा होता है, उसे टाला नहीं जा सकता। यह बात असत्य है। मनुष्य यदि परिश्रम करे, तो होनी को भी टाल सकता है। किसी ने सत्य ही कहा है, कि परिश्रम ही सफ़लता की कुंजी है। एक आलसी व अकर्मण्य मानव कभी अपना लक्ष्य नहीं प्राप्त कर सकता। भाग्य के सहारे बैठने से कार्य सम्पन्न नहीं होते। विद्यार्थी वर्ग को भी परीक्षा में

सफलता पाने के लिये अटूट श्रम करना पड़ता है।मानव परिश्रम से अपने भाग्य को बना सकता है ,कहा जाता है कि ईश्वर भी उन्ही की मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करते हैं। जैसे सोये हुए शेर के मुख में पशु स्वयं ही प्रवेश नहीं करता उसे भी परिश्रम करना पड़ता है, वैसे ही केवल मन की इच्छा से काम सिद्ध नही होते उनके लिये परिश्रम करना पड़ता है। परिश्रम ही जीवन की सफलता का रहस्य है।

परिश्रम व सफलता का आपस में बड़ा गहरा संबंध है। हमें तभी सफलता मिलती है जब हम परिश्रम करते हैं। परिश्रम से मनुष्य सदैव मेहनती बना रहता है, परिश्रम जीवन को गति प्रदान करता है। यह मनुष्य के जीवन में बहुत ही महत्व रखता है। परिश्रम की उपेक्षा मनुष्य को निकम्मा व असफल बना देती है। परिश्रम समस्त कठिनाइयों से निकालने में समर्थ होता है। परिश्रमी मनुष्य भाग्य के भरोसे नहीं बैठे रहते हैं। परिश्रम के दम पर कई महान विभूतियों ने अंसभव कार्यों को संभव कर दिखाया है। जिस देश में लोग परिश्रम करते हैं, वह देश उन्नति, विकास और सफलता के शिखर पर खड़ा रहता है।

प्र. 17. छोटे भाई को पत्र लिखकर मालूम कीजिए कि उसकी पढाई कैसी चल रही है साथ ही उसे पढाई के सम्बंध में कुछ उपयोगी बातें भी बताइए। 5

जोसेफ़ एंड मेरी स्कूल
ब्लाक-एन, अलीपुर
पश्चिम बंगाल-42
दिनांक - 15 मार्च 2010

प्रिय अजय,
चिरंजीव रहो ।

कल ही पिता जी का पत्र प्राप्त हुआ। उस पत्र को पढ़कर पता चला कि तुम अधिकांश समय खेलकूद में तथा मित्रों के साथ व्यर्थ के वार्तालाप में नष्ट कर देते हो। यह उचित नहीं है। मन को एकाग्र करके पढ़ाई की ओर ध्यान दो। अपनी दिनचर्या नियमित करो और हर क्षण अपने लक्ष्य पर दृष्टी रखो। तुम्हें ज्ञात होगा कि जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं, उन्होंने अपने जीवन के एक क्षण को भी व्यर्थ नहीं जाने दिया। प्रिय अजय। याद रखो, समय संसार का सबसे बड़ा शासक है। समय का मूल्य समझना है। यह बात ठीक है कि जीवन में मनोरंजन का भी महत्व है, पर मेहनत का पसीना बहाने के बाद।

यदि तुम एकाग्र मन से नहीं पढ़ोगे, तो परीक्षा में असफल होने के कारण तुम्हारा भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। अपना ध्यान पढ़ाई में लगाओ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम समय का मूल्य समझोगे और उसके सदुपयोग द्वारा अपने जीवन को सफल बनाओगे। माता जी और पिता जी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारी बहन
हेमा।

अथवा

अपने नगर के चिड़ियाघर को देखने पर वहाँ की अव्यवस्था से आपको बहुत दुख हुआ। इस अव्यवस्था के प्रति चिड़ियाघर के निर्देशक का ध्यान आकृष्ट करते हुए एक पत्र लिखिए।

28, नेहरू भवन

विजय नगर

नई दिल्ली

दिनांक : 15 अप्रैल, 20

सेवा में

मुख्य अधिकारी

चिड़ियाघर

नई दिल्ली

महोदय

विषय

महोदय

बड़े ही खेद के साथ यह पत्र लिख रहा हूँ । कल मैं अपने परिवार के साथ आपके चिड़ियाघर की सैर पर आया था। वहाँ मैंने देखा कि जानवरों की सही से देखभाल नहीं करते। उनको सही भोजन नहीं दिया जाता। इसके अलावा जो लोग चिड़ियाघर की मुलाकात लेने आते है उनके लिए भी पीने के पानी, बैठने आदि की कोई व्यवस्था नहीं है।

आशा है कि आप इस समस्या पर गौर करेंगे और शीघ्र ही आवश्यक कार्यवाही द्वारा चिड़ियाघर की अव्यवस्था दूर करेंगे।

धन्यवाद

भवदीय

किशोर कत्याल।